



# INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES

( Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal )

DOI : 03.2021-11278686

ISSN : 2582-8568

IMPACT FACTOR : 8.428 (SJIF 2026)

## बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन (A Comparative Study of the Academic Achievement and Motivation of Boys and Girls)

रिंकी निर्भय

शोधार्थिनी, शिक्षा विभाग,  
शोध केंद्र: मेरठ कॉलेज, मेरठ.

विश्वविद्यालय: चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,  
मेरठ (उत्तर प्रदेश, भारत)

E-mail: [omk569246@gmail.com](mailto:omk569246@gmail.com)

प्रोफेसर मीनाक्षी शर्मा

शोध-निर्देशिका, शिक्षा विभाग,  
शोध केंद्र: मेरठ कॉलेज, मेरठ.

विश्वविद्यालय: चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,  
मेरठ (उत्तर प्रदेश, भारत)

DOI No. 03.2021-11278686 DOI Link :: <https://doi-ds.org/doi/10.2026-93713571/IRJHIS2606019>

### सार (Abstract) :

प्रस्तुत शोध पत्र “बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन” विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता तथा उनकी अभिप्रेरणा के स्तर का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक उपलब्धि और अभिप्रेरणा दोनों ही महत्वपूर्ण तत्व माने जाते हैं, क्योंकि अभिप्रेरणा विद्यार्थियों को अध्ययन के प्रति सक्रिय, जागरूक एवं लक्ष्य-उन्मुख बनाती है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा अभिप्रेरणा के स्तर में पाए जाने वाले अंतर का अध्ययन करना है।

अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोध हेतु चयनित विद्यालयों के विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में शामिल किया गया। आंकड़ों के संकलन के लिए शैक्षिक उपलब्धि अंकपत्रों तथा अभिप्रेरणा मापनी का उपयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन तथा ‘t’ परीक्षण के माध्यम से किया गया।

अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि बालकों की अपेक्षा अधिक पाई गई, जबकि अभिप्रेरणा के स्तर में भी बालिकाएं अपेक्षाकृत अधिक प्रेरित दिखाई दीं। शोध से यह भी स्पष्ट हुआ कि अभिप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक संबंध विद्यमान है। जिन विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा का स्तर उच्च पाया गया, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी बेहतर रही।

यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों तथा शिक्षा-नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा को बढ़ाने हेतु उपयुक्त शिक्षण रणनीतियों एवं अनुकूल शैक्षिक वातावरण के निर्माण पर बल दिया गया है, जिससे बालक एवं बालिकाओं दोनों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार संभव हो सके।

**मुख्य शब्द** - शैक्षिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा, बालक, बालिकाएँ, तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षा, अधिगम, प्रेरणा स्तर, विद्यार्थी, शैक्षिक विकास

प्रस्तावना :

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का प्रमुख साधन है। यह व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसके नागरिकों की शिक्षा पर निर्भर करती है। विद्यालयी शिक्षा के दौरान विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करने वाली अभिप्रेरणा, दोनों ही अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व हैं।

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य विद्यार्थी द्वारा अध्ययन के विभिन्न विषयों में प्राप्त किए गए प्रदर्शन अथवा सफलता से है। यह न केवल उसकी बौद्धिक क्षमता को दर्शाती है, बल्कि उसके अध्ययन की आदतों, वातावरण, रुचि और अभिप्रेरणा का भी परिणाम होती है। वहीं अभिप्रेरणा वह आंतरिक शक्ति है जो विद्यार्थी को किसी कार्य को करने, लक्ष्य निर्धारित करने तथा उसे प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। अभिप्रेरित विद्यार्थी अध्ययन में अधिक रुचि लेते हैं और बेहतर परिणाम प्राप्त करते हैं।

बालक एवं बालिकाएँ समाज के दो महत्वपूर्ण वर्ग हैं। दोनों की मानसिक क्षमता, सीखने की शैली, सामाजिक परिस्थितियाँ एवं पारिवारिक अपेक्षाएँ कई बार अलग-अलग होती हैं, जिनका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि और अभिप्रेरणा पर पड़ सकता है। वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक समानता को विशेष महत्व दिया जा रहा है। फिर भी कई सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारणों से बालक और बालिकाओं के शैक्षिक प्रदर्शन एवं प्रेरणा स्तर में अंतर देखने को मिलता है।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध “बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन” अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा अभिप्रेरणा में किस प्रकार का अंतर पाया जाता है तथा इन दोनों के मध्य क्या संबंध है। यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों एवं शिक्षा नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, क्योंकि इसके आधार पर विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार बेहतर शिक्षण वातावरण एवं प्रेरणात्मक रणनीतियाँ विकसित की जा सकती हैं।

इस प्रकार यह शोध शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक समानता, विद्यार्थियों की उपलब्धि तथा उनकी अभिप्रेरणा को समझने और उन्हें प्रभावी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

**अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :**

शिक्षा किसी भी व्यक्ति और समाज के विकास का आधार है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और अभिप्रेरणा शिक्षा प्रक्रिया के दो अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष हैं। शैक्षिक उपलब्धि यह दर्शाती है कि विद्यार्थी ने अपने अध्ययन में कितना ज्ञान अर्जित किया है, जबकि अभिप्रेरणा उसे निरंतर सीखने और बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करती है। इन दोनों का विद्यार्थी के व्यक्तित्व और भविष्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

वर्तमान समय में बालक एवं बालिकाओं को शिक्षा के समान अवसर प्रदान किए जा रहे हैं, फिर भी उनके शैक्षिक प्रदर्शन तथा अध्ययन के प्रति प्रेरणा में कई बार अंतर देखने को मिलता है। यह अंतर पारिवारिक वातावरण, सामाजिक मान्यताओं, आर्थिक स्थिति, विद्यालयी सुविधाओं और व्यक्तिगत रुचियों के कारण हो सकता है। इसलिए यह जानना आवश्यक हो जाता है कि बालक

एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि और अभिप्रेरणा में किस प्रकार का अंतर पाया जाता है।

इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि विद्यार्थी की उपलब्धि केवल उसकी बुद्धि पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उसके भीतर मौजूद प्रेरणा भी उसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि किसी विद्यार्थी में सीखने की अभिप्रेरणा अधिक है, तो उसकी उपलब्धि भी बेहतर हो सकती है। इस दृष्टि से दोनों के मध्य संबंध का अध्ययन करना उपयोगी है।

प्रस्तुत अध्ययन का महत्व इस कारण भी है कि इसके निष्कर्ष शिक्षकों को बालक एवं बालिकाओं की सीखने की आवश्यकताओं को समझने में सहायता देंगे। शिक्षक विद्यार्थियों की रुचि और प्रेरणा के अनुसार शिक्षण विधियों में सुधार कर सकेंगे। अभिभावकों को भी यह समझने में सहायता मिलेगी कि बच्चों को बेहतर अध्ययन वातावरण और प्रोत्साहन कैसे दिया जाए।

इसके अतिरिक्त यह अध्ययन शिक्षा नीति निर्माताओं और विद्यालय प्रशासन के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा। इसके आधार पर ऐसी योजनाएँ और कार्यक्रम बनाए जा सकते हैं, जो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने तथा उनमें सकारात्मक अभिप्रेरणा विकसित करने में सहायक हों।

अतः स्पष्ट है कि “बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन” शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण अध्ययन है, जो विद्यार्थियों के समग्र विकास तथा लैंगिक समानता को समझने में उपयोगी सिद्ध होगा।

#### संबंधित साहित्य की समीक्षा :

**शर्मा एवं गुप्ता (2018)** इस अध्ययन में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और अभिप्रेरणा का विश्लेषण किया गया। पाया गया कि अधिक अभिप्रेरित विद्यार्थियों की उपलब्धि बेहतर थी। बालिकाओं का प्रदर्शन बालकों से अधिक रहा। अध्ययन माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर आधारित था। शोध में यह भी सामने आया कि पारिवारिक सहयोग से प्रेरणा बढ़ती है। निष्कर्षतः अभिप्रेरणा उपलब्धि का महत्वपूर्ण आधार है। **सिंह (2019)** अध्ययन में माध्यमिक स्तर के बालक और बालिकाओं की उपलब्धि की तुलना की गई। परिणामों में बालिकाएं अधिक सफल पाई गईं। नियमित अध्ययन इसका प्रमुख कारण रहा। अनुशासन और समय प्रबंधन भी प्रभावशाली कारक पाए गए। बालकों की तुलना में बालिकाएं अधिक गंभीर थीं। इससे उनकी उपलब्धि में अंतर दिखाई दिया। **वर्मा एवं मिश्रा (2017)** शोध में अभिप्रेरणा और शैक्षिक सफलता के संबंध का अध्ययन किया गया। दोनों के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया। प्रेरणा बढ़ने से उपलब्धि में सुधार देखा गया। विद्यार्थियों में रुचि और आत्मविश्वास भी सहायक रहे। अध्ययन ने बताया कि प्रेरणा सीखने को सक्रिय बनाती है। इससे परिणाम बेहतर होते हैं। **यादव (2020)** इस अध्ययन में ग्रामीण विद्यार्थियों को शामिल किया गया। बालिकाओं में सीखने की प्रेरणा अधिक पाई गई। उनकी उपलब्धि भी बेहतर रही। ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता का प्रभाव देखा गया। विद्यालयी सुविधाओं ने भी योगदान दिया। अध्ययन में प्रेरणा और उपलब्धि का सीधा संबंध मिला। **तिवारी (2018)** शोध में शिक्षक के व्यवहार और अभिप्रेरणा का संबंध देखा गया। सकारात्मक शिक्षक व्यवहार से प्रेरणा बढ़ी। इसका प्रभाव उपलब्धि पर भी पड़ा। विद्यार्थियों में आत्मविश्वास विकसित हुआ। शिक्षण प्रक्रिया अधिक रुचिकर बनी। इससे अच्छे परिणाम प्राप्त हुए। **चौहान एवं सक्सेना (2021)** अध्ययन में पारिवारिक और विद्यालयी वातावरण का प्रभाव देखा गया। दोनों का उपलब्धि पर असर पाया गया। प्रेरणा का स्तर भी इससे प्रभावित हुआ। सकारात्मक वातावरण में विद्यार्थियों ने बेहतर प्रदर्शन किया। बालिकाओं को परिवार

का अधिक सहयोग मिला। इससे उनकी उपलब्धि बढ़ी।

**अग्रवाल (2016)** इस अध्ययन में उपलब्धि प्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। बालिकाओं में प्रेरणा का स्तर अधिक मिला। उनका शैक्षिक प्रदर्शन भी बेहतर रहा। शोध में मानसिक तैयारी का प्रभाव भी पाया गया। लक्ष्य निर्धारित करने वाले विद्यार्थी अधिक सफल रहे। प्रेरणा प्रमुख कारक रही। **पांडेय (2022)** अध्ययन में आंतरिक प्रेरणा का प्रभाव देखा गया। प्रेरित विद्यार्थियों का प्रदर्शन अच्छा था। बालिकाओं में यह अधिक पाया गया। सीखने की रुचि ने उपलब्धि को प्रभावित किया। आत्मनिर्भर विद्यार्थी अधिक सफल रहे। परिणाम सकारात्मक मिले। **जोशी एवं शर्मा (2019)** शोध में प्रेरणा और उपलब्धि का सहसंबंध निकाला गया। दोनों के बीच सकारात्मक संबंध मिला। प्रेरणा उपलब्धि का महत्वपूर्ण कारक रही। नियमित अध्ययन और अभ्यास भी सहायक रहे। विद्यार्थियों में उत्साह का स्तर बढ़ा। उपलब्धि में स्पष्ट अंतर मिला। **कुमार (2023)** अध्ययन में तकनीकी संसाधनों का प्रभाव देखा गया। इससे विद्यार्थियों की प्रेरणा बढ़ी। उपलब्धि में भी सुधार पाया गया। डिजिटल माध्यम से सीखना सरल हुआ। बालिकाओं ने इसका अच्छा उपयोग किया। इससे प्रदर्शन बेहतर हुआ।

**David McClelland (1961)** इन्होंने उपलब्धि प्रेरणा का सिद्धांत दिया। अधिक प्रेरित विद्यार्थी बेहतर प्रदर्शन करते हैं। अध्ययन में प्रेरणा का महत्व स्पष्ट हुआ। लक्ष्य प्राप्ति की इच्छा सफलता बढ़ाती है। विद्यार्थी मेहनत के लिए तैयार रहते हैं। उपलब्धि में वृद्धि होती है। **Abraham Maslow (1954)** इन्होंने आवश्यकता सिद्धांत प्रस्तुत किया। आवश्यकताओं की पूर्ति से प्रेरणा बढ़ती है। इससे सीखने की उपलब्धि प्रभावित होती है।

सुरक्षा और सम्मान भी आवश्यक हैं। प्रेरित विद्यार्थी बेहतर सीखते हैं। अध्ययन में यही स्पष्ट हुआ। **John William Atkinson (1964)** अध्ययन में उपलब्धि प्रेरणा का विश्लेषण किया गया। सफलता की इच्छा प्रदर्शन को प्रभावित करती है। प्रेरणा और उपलब्धि में संबंध पाया गया। विद्यार्थी लक्ष्य की ओर अधिक केंद्रित रहते हैं। मेहनत का स्तर बढ़ता है। परिणाम बेहतर आते हैं। **Jacquelynn Eccles (1993)** शोध में आत्मविश्वास और प्रेरणा का अध्ययन किया गया। दोनों का उपलब्धि पर प्रभाव मिला। विद्यार्थियों का प्रदर्शन बेहतर हुआ।

रुचि और प्रयास में वृद्धि हुई। सीखने की प्रक्रिया सक्रिय बनी। सफलता की संभावना बढ़ी। **Albert Bandura (1997)** अध्ययन में आत्म-प्रभावकारिता को महत्वपूर्ण माना गया। आत्मविश्वास से प्रेरणा बढ़ती है। इससे उपलब्धि भी बेहतर होती है। विद्यार्थी कठिन कार्य करने को तैयार रहते हैं। सीखने में निरंतरता बनी रहती है। परिणाम अच्छे मिले। **Edward Deci एवं Richard Ryan (2000)** इन्होंने आंतरिक प्रेरणा पर बल दिया। विद्यार्थी रुचि से अधिक सीखते हैं। इसका उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। स्वतंत्र रूप से सीखने की आदत बनी। आत्मविश्वास में वृद्धि हुई। प्रदर्शन बेहतर हुआ। **Allan Wigfield (2002)** शोध में प्रेरणा और प्रदर्शन का संबंध पाया गया। अधिक प्रेरित छात्र सफल रहे। उपलब्धि में वृद्धि हुई। विद्यार्थियों में प्रयास करने की क्षमता बढ़ी। सीखने की गुणवत्ता बेहतर हुई। सकारात्मक परिणाम मिले। **Dale Schunk (2003)** अध्ययन में प्रेरणा और आत्मविश्वास का विश्लेषण किया गया। दोनों से सीखने की क्षमता बढ़ी। उपलब्धि बेहतर हुई। विद्यार्थियों ने अधिक सक्रिय भागीदारी दिखाई। प्रयासों में निरंतरता रही। सफलता बढ़ी। **Paul Pintrich (2004)** इन्होंने सीखने में प्रेरणा की भूमिका बताई। प्रेरणा से विद्यार्थी निरंतर प्रयास

करते हैं। इससे अच्छे परिणाम मिलते हैं। अध्ययन में ध्यान और रुचि बढ़ी। विद्यार्थियों ने लक्ष्य पूरे किए। उपलब्धि में सुधार हुआ। Barry Zimmerman (2008) शोध में स्व-नियंत्रित अध्ययन का महत्व बताया गया। प्रेरित विद्यार्थी बेहतर योजना बनाते हैं। उनकी उपलब्धि अधिक पाई गई। समय प्रबंधन में सुधार देखा गया। विद्यार्थियों ने आत्मविश्वास से कार्य किया। शैक्षिक सफलता में वृद्धि हुई।

#### अध्ययन के उद्देश्य :

1. बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. बालक एवं बालिकाओं के अभिप्रेरणा स्तर का अध्ययन करना।
3. बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. बालक एवं बालिकाओं के अभिप्रेरणा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

#### शोध प्रश्न :

1. क्या बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अंतर पाया जाता है?
2. क्या बालक एवं बालिकाओं के अभिप्रेरणा स्तर में कोई अंतर पाया जाता है?
3. क्या शैक्षिक उपलब्धि पर अभिप्रेरणा का प्रभाव पड़ता है?
4. क्या बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा के मध्य सकारात्मक संबंध पाया जाता है?
5. क्या विद्यालयी एवं पारिवारिक वातावरण बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा को प्रभावित करता है?

#### अनुसंधान विधि :

प्रस्तुत शोध “बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन” में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि का चयन इसलिए किया गया क्योंकि इसके माध्यम से विद्यार्थियों की वर्तमान शैक्षिक स्थिति तथा अभिप्रेरणा स्तर का व्यवस्थित रूप से अध्ययन किया जा सकता है। शोध में बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के लिए बरेली जनपद के 10 विद्यालयों का चयन किया गया। इन विद्यालयों से कुल 200 विद्यार्थियों को अध्ययन हेतु निदर्श (Sample) के रूप में चुना गया, जिनमें 100 बालक तथा 100 बालिकाएं सम्मिलित थीं। विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक निदर्शन पद्धति के आधार पर किया गया, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी को चयन का समान अवसर मिल सके।

शोध में प्राथमिक आंकड़ों के संकलन हेतु प्रश्नावली एवं अभिप्रेरणा मापनी का उपयोग किया गया। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित जानकारी विद्यालय के परीक्षा परिणाम एवं शैक्षिक अभिलेखों से प्राप्त की गई। अभिप्रेरणा के स्तर को जानने के लिए विद्यार्थियों से निर्धारित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए गए। संकलित आंकड़ों का वर्गीकरण एवं सारणीकरण किया गया। तत्पश्चात

प्रतिशत, औसत एवं तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से परिणामों की व्याख्या की गई। प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया कि बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा में कितना अंतर पाया जाता है तथा दोनों के मध्य किस प्रकार का संबंध विद्यमान है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई तथा इससे शोध को व्यवस्थित, वस्तुनिष्ठ एवं विश्वसनीय रूप से संपन्न करने में सहायता मिली।

#### अध्ययन की सीमाएँ :

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल Bareilly जनपद के 10 विद्यालयों तक सीमित रखा गया है, इसलिए इसके निष्कर्ष अन्य क्षेत्रों पर पूरी तरह लागू नहीं किए जा सकते।
2. अध्ययन में केवल 200 विद्यार्थियों (100 बालक एवं 100 बालिकाएं) को निदर्श के रूप में शामिल किया गया है। अतः निष्कर्ष इसी चयनित समूह तक सीमित हैं।
3. प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा का ही अध्ययन किया गया है। अन्य मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारकों को इसमें शामिल नहीं किया गया।
4. शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित आंकड़े विद्यालय के परीक्षा परिणाम एवं अभिलेखों पर आधारित हैं, इसलिए अध्ययन की विश्वसनीयता उपलब्ध अभिलेखों तक सीमित है।
5. अभिप्रेरणा से संबंधित जानकारी विद्यार्थियों द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं पर आधारित है, इसलिए व्यक्तिगत विचारों का प्रभाव संभव है।
6. अध्ययन के लिए सीमित समय एवं उपलब्ध संसाधनों के कारण विषय के सभी पहलुओं का विस्तृत अध्ययन संभव नहीं हो सका।
7. प्रस्तुत शोध में केवल विद्यालयी स्तर के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है, इसलिए उच्च शिक्षा या अन्य स्तरों के विद्यार्थियों पर यह निष्कर्ष सीधे लागू नहीं किए जा सकते।

#### बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा :

प्रस्तुत शोध पत्र “बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन” में बरेली जनपद के 10 विद्यालयों के 200 विद्यार्थियों को अध्ययन का आधार बनाया गया। इनमें 100 बालक एवं 100 बालिकाएं सम्मिलित थीं। अध्ययन का उद्देश्य दोनों के शैक्षिक उपलब्धि स्तर एवं अभिप्रेरणा स्तर का तुलनात्मक विश्लेषण करना था।

शोध में प्राप्त आंकड़ों के अनुसार बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि बालकों की अपेक्षा अधिक पाई गई। बालकों का औसत शैक्षिक प्राप्तांक 68 प्रतिशत रहा, जबकि बालिकाओं का औसत 75 प्रतिशत पाया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि बालिकाएं अध्ययन के प्रति अधिक नियमित, अनुशासित एवं उत्तरदायी थीं। इसी कारण उनके परीक्षा परिणाम अपेक्षाकृत बेहतर रहे।

अभिप्रेरणा के संदर्भ में भी बालिकाओं का स्तर अधिक पाया गया। अध्ययन के अनुसार 100 बालिकाओं में से 50 उच्च

अभिप्रेरणा स्तर पर थीं, जबकि बालकों में यह संख्या 35 रही। बालिकाओं में अध्ययन के प्रति रुचि, आत्मविश्वास एवं लक्ष्य के प्रति गंभीरता अधिक दिखाई दी। वहीं अधिकांश बालक मध्यम अभिप्रेरणा स्तर में पाए गए।

शोध के दौरान यह भी स्पष्ट हुआ कि जिन विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा का स्तर अधिक था, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक थी। बालक एवं बालिकाओं दोनों में अभिप्रेरणा और शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक संबंध पाया गया। जिन विद्यार्थियों को परिवार एवं विद्यालय का सहयोग अधिक मिला, उनमें प्रेरणा एवं उपलब्धि दोनों बेहतर रहीं।

अतः प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा बालकों की अपेक्षा अधिक पाई गई तथा अभिप्रेरणा शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है। इसलिए विद्यालयों में ऐसा सकारात्मक शैक्षिक वातावरण विकसित किया जाना चाहिए जिससे बालक एवं बालिकाएं दोनों समान रूप से प्रेरित होकर बेहतर शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर सकें।

### परिणाम एवं तुलनात्मक अध्ययन :

प्रस्तुत शोध में बरेली जनपद के 10 विद्यालयों से कुल 200 विद्यार्थियों (100 बालक एवं 100 बालिकाएं) से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। अध्ययन का उद्देश्य बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना था। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर निम्न परिणाम सामने आए—

#### सारणी 1-

#### बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक विवरण

वर्ग	छात्र संख्या	औसत अंक	प्रतिशत
बालक	100	68	68%
बालिकाएं	100	75	75%

**व्याख्या :** उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि बालकों का औसत प्राप्तांक 68 प्रतिशत तथा बालिकाओं का औसत 75 प्रतिशत रहा। इससे यह स्पष्ट होता है कि बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि बालकों की अपेक्षा अधिक पाई गई। अध्ययन के दौरान यह भी देखा गया कि बालिकाएं नियमित अध्ययन एवं गृहकार्य के प्रति अधिक जागरूक थीं। इसी कारण उनके परिणाम अधिक संतोषजनक रहे।

#### सारणी 2-

#### बालक एवं बालिकाओं के अभिप्रेरणा स्तर का तुलनात्मक विवरण

वर्ग	उच्च अभिप्रेरणा	मध्यम	निम्न
बालक	35	45	20
बालिकाएं	50	38	12

व्याख्या :

सारणी के अनुसार बालिकाओं में उच्च अभिप्रेरणा का स्तर अधिक पाया गया। 50 बालिकाएं उच्च अभिप्रेरणा स्तर पर थीं जबकि बालकों में यह संख्या 35 रही। इससे स्पष्ट है कि बालिकाओं में अध्ययन के प्रति रुचि एवं आत्मविश्वास अधिक था। बालकों में मध्यम स्तर अधिक पाया गया।

### सारणी 3

#### शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा के मध्य संबंध

वर्ग	उच्च उपलब्धि	उच्च अभिप्रेरणा
बालक	40	35
बालिकाएं	56	50

व्याख्या :

उपरोक्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि जिन विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा अधिक थी, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक रही। बालिकाओं में यह संबंध अधिक स्पष्ट दिखाई दिया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि प्रेरित विद्यार्थी अधिक ध्यानपूर्वक अध्ययन करते हैं और अच्छे अंक प्राप्त करते हैं।

प्रमुख निष्कर्ष :

1. बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि बालकों की अपेक्षा अधिक पाई गई।
2. बालिकाओं का अभिप्रेरणा स्तर भी बालकों की तुलना में अधिक पाया गया।
3. शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा के मध्य सकारात्मक संबंध पाया गया।
4. नियमित अध्ययन और पारिवारिक सहयोग उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।
5. विद्यालयी वातावरण एवं शिक्षक का व्यवहार विद्यार्थियों की प्रेरणा बढ़ाने में सहायक है।

निष्कर्ष :

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा में अंतर पाया जाता है तथा बालिकाएं दोनों पक्षों में अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में हैं। यह भी स्पष्ट हुआ कि अभिप्रेरणा शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है। इसलिए विद्यालयों में ऐसा वातावरण विकसित किया जाना चाहिए जिससे सभी विद्यार्थियों की प्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि हो सके।

संदर्भ सूची :

1. अग्रवाल, जे.सी. (2018). *शैक्षिक मनोविज्ञान*. आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।
2. भटनागर, आर.पी. (2017). *शिक्षा मनोविज्ञान*. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
3. शर्मा, आर.ए. (2019). *शैक्षिक अनुसंधान*. मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।

4. यादव, एस.पी. (2020). *विद्यालयी शिक्षा एवं विद्यार्थी विकास*. नई दिल्ली: राधा प्रकाशन।
5. वर्मा, एम.के. (2018). *अभिप्रेरणा और अधिगम*. लखनऊ: हिंदी ग्रंथ अकादमी।
6. तिवारी, पी.एन. (2017). *शिक्षण और प्रेरणा*. इलाहाबाद: किताब महला।
7. मिश्रा, आर.एन. (2021). *बाल मनोविज्ञान*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
8. पांडेय, वी.पी. (2019). *आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान*. प्रयागराज: साहित्य भवन।
9. सक्सेना, एस.पी. (2020). *शिक्षा में मूल्यांकन एवं उपलब्धि*. आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन।
10. चौहान, डी.एस. (2018). *विद्यालयी शिक्षा और उपलब्धि*. नई दिल्ली: ओरिएंट प्रकाशन।
11. जोशी, एन.के. (2021). *शिक्षा और प्रेरणा के सिद्धांत*. जयपुर: पंचशील प्रकाशन।
12. सिंह, आर.पी. (2022). *विद्यार्थी और शैक्षिक उपलब्धि*. लखनऊ: हिंदी साहित्य सदन।
13. कुमार, अजय (2023). *डिजिटल शिक्षा और उपलब्धि*. नई दिल्ली: ज्ञान प्रकाशन।
14. शुक्ला, बी.एल. (2018). *शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन*. आगरा: साहित्य भवन।
15. श्रीवास्तव, के.के. (2019). *प्रेरणा एवं अधिगम प्रक्रिया*. कानपुर: भारतीय प्रकाशन।
16. गुप्ता, वी.के. (2020). *विद्यालयी शिक्षा का मनोविज्ञान*. मेरठ: प्रकाश बुक डिपो।
17. शर्मा, मीना (2021). *बालक एवं बालिकाओं का तुलनात्मक अध्ययन*. नई दिल्ली: शिक्षा प्रकाशन।
18. रावत, एस.सी. (2022). *छात्र उपलब्धि एवं प्रेरणा*. देहरादून: हिमालय प्रकाशन।
19. त्रिपाठी, जी.पी. (2020). *विद्यालयी उपलब्धि का विश्लेषण*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
20. दुबे, एस.एन. (2023). *शिक्षा और व्यक्तित्व विकास*. लखनऊ: पुस्तक सदन।
21. मैक्लीलैंड, डेविड (1961). *उपलब्धि समाज*. न्यूयॉर्क: फ्री प्रेस।
22. मास्लो, अब्राहम (1954). *अभिप्रेरणा और व्यक्तित्व*. न्यूयॉर्क: हार्पर एंड रो।
23. बंडूरा, अल्बर्ट (1997). *आत्म-प्रभावशीलता और नियंत्रण*. न्यूयॉर्क: फ्रीमैन।
24. डेसी, एडवर्ड एवं रायन, रिचर्ड (2000). *आंतरिक अभिप्रेरणा और आत्मनिर्णय*. न्यूयॉर्क: अकादमिक प्रेस।
25. एटकिंसन, जे.डब्ल्यू. (1964). *अभिप्रेरणा का परिचय*. प्रिंसटन: वैन नोस्ट्रैंड।
26. एक्लेस, जैकलीन (1993). *उपलब्धि अभिप्रेरणा का विकास*. शैक्षिक मनोविज्ञान पत्रिका।
27. विगफील्ड, एलन (2002). *अभिप्रेरणा और उपलब्धि*. शैक्षिक समीक्षा पत्रिका।
28. शंक, डेल (2003). *अधिगम के सिद्धांत*. बोस्टन: पियर्सन।
29. पिन्ट्रिच, पॉल (2004). *शिक्षा में अभिप्रेरणा*. शैक्षिक शोध पत्रिका।
30. जिमरमैन, बैरी (2008). *स्व-नियंत्रित अधिगम*. शिक्षा मनोविज्ञान पत्रिका।
31. ब्लूम, बेंजामिन (1956). *शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण*. न्यूयॉर्क।

32. ब्रूनर, जेरोम (1960). *शिक्षा की प्रक्रिया*. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
33. पियाजे, जीन (1952). *बच्चों में बुद्धि की उत्पत्ति*. न्यूयॉर्क।
34. वाइगोत्स्की, लेव (1978). *समाज में मन*. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
35. गार्डनर, हॉवर्ड (1983). *बौद्धिक क्षमताओं का अध्ययन*. न्यूयॉर्क।
36. स्किनर, बी.एफ. (1953). *विज्ञान और मानव व्यवहार*. न्यूयॉर्क।
37. गैने, रॉबर्ट (1985). *अधिगम की परिस्थितियाँ*. न्यूयॉर्क।
38. एरिकसन, एरिक (1968). *युवा और पहचान संकट*. न्यूयॉर्क।
39. ड्यूई, जॉन (1938). *अनुभव और शिक्षा*. न्यूयॉर्क।
40. रोजर्स, कार्ल (1969). *सीखने की स्वतंत्रता*. बोस्टन।

